

चौहान वंश

7-12वीं शताब्दी तक इस वंश का शासन रहा।

चौहानों की उत्पत्ति के मत

अग्निकुंड

- चन्द्रबरदाई (पृथ्वीराज रासो) ने अग्निकुंड सिद्धांत से अग्निवंशी कहा है।
- आबू पर्वत पर वशिष्ठ ऋषि ने यज्ञ करवाया।
- इससे प्रतिहार, परमार, चालुक्य व चौहान उत्पन्न हुए।

सूर्यवंशी

- पृथ्वीराज विजय, हम्मीर महाकाव्य, सुर्जन चरित्र में इन्हें सूर्यवंशी कहा है।

ब्राह्मण मत

- इन्हें वत्स गोत्रीय ब्राह्मण अवतार माना गया है।

डॉ. दशरथ शर्मा

- सपादलक्ष का शासक वासुदेव (मूल पुरुष) मानते हैं।

विदेशी मत

- टॉड, विलियम क्रूक, स्मिथ आदि ने इन्हें विदेशी माना है।
- डी. आर. भंडारकर ने इन्हें गुर्जर कहा है।
- वॉटसन ने इन्हें खजर कहा है।

बिजौलिया शिलालेख (बीजोलिया, भीलवाड़ा)

- चौहानों का आदि पुरुष सामन्त था।
- इन्हें वत्स गोत्रीय ब्राह्मण कहा गया।

राजौर (अलवर) के शिलालेख

- चौहानों का गोत्र अहिछत्रपुर बताया गया।

शाकम्भरी / सांभर के चौहान

- चौहानों का मूल राज्य सपादलक्ष (सांभर क्षेत्र) था।
- इन्हें सपादलक्ष (सवालक्ष) के चौहान कहा गया।

वासुदेव - 551 ई.

- आदि पुरुष / संस्थापक।
- शिलालेखों में वासुदेव बहुमान की उपाधि।
- विद्याधर द्वारा रचित पृथ्वीराज विजय में श्रीकृष्ण का अवतार कहा गया।
- वासुदेव चहमान का उल्लेख।

नोटः

सूर्य - प्रथम चौहान शासक थे जिन्होंने सिक्के चलवाए, जिन पर वासुदेव बहुमान अंकित था।

गुवक प्रथम

- प्रतिहारों का सामन्त था।
- प्रतिहार शासक नागभट्ट द्वितीय की सहायता की।
- हर्षनाथ (सीकर) का मंदिर बनवाया।

चन्दराज

- इन्होंने तोमर शासकों पर विजय प्राप्त की।
- वाक्पति राज प्रथम का पिता।

वाक्पति राज प्रथम

- प्रतिहारों का सामन्त था।
- शिवगण नामक प्रतिहार सामन्त को हराया।

- पुष्कर में शिव मंदिर बनवाया।

सिंहराज

- महाराजाधिराज की उपाधि धारण की।

विग्रहराज द्वितीय

- सर्वप्रथम स्वतंत्र शासक माना जाता है।
- चालुक्यों से युद्ध किया।
- नर्मदा नदी तक आक्रमण किया।
- आशापुरी माता का मंदिर बनवाया।

दुर्लभराज द्वितीय

- रासोशित्तम मंडल पर अधिकार किया।

चामुण्डराज

दुर्लभराज तृतीय

विग्रहराज तृतीय

पृथ्वीराज प्रथम

- अजयराज के पिता।
- पृथ्वीराज विजय ग्रंथ (रचयिता - जयानक) में बताया गया है कि इन्होंने 700 चालुक्यों को मार डाला था, जो पुष्कर में ब्राह्मणों को लूटने आये थे।

अजयराज चौहान (1105-1133 ई.)

- 1113 ई. में अजयमेरु (अजमेर) की स्थापना कर अजमेर को राजधानी बनाया।
- अजयदेव / अजयप्रिय नाम से चाँदी के सिक्के चलाये, पृथ्वी को चाँदी के सिक्कों से भर दिया था।

- सिक्कों पर इनकी रानी **सोमलदेवी** का भी नाम मिलता है।

अर्णोराज / आनाजी (1133-1155 ई.)

- तुर्क आक्रमणकारियों को खदेड़ा तथा **मालवा** के शासक **नरवर्मन** को पराजित किया।
- इस स्थान को शुद्ध करने के लिए हवन कराया तथा **चन्द्रा नदी** का जल रोककर **1137 ई.** में **आनासागर झील** का निर्माण कराया।
- पुष्कर में **वराह मंदिर** का निर्माण कराया।
- **देवबोध** एवं **धर्मघोष** इनके दरबारी विद्वान थे।
- **परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर** की उपाधि धारण की।
- चालुक्य शासक **कुमारपाल** ने इन्हें आबू के युद्ध में हरा दिया था। इस युद्ध का वर्णन **प्रबंध चिंतामणि** (लेखक - मेस्तंग) तथा **प्रबंध कोश** (लेखक - राजशेखर) में मिलता है।
- चालुक्य नरेश **जयसिंह सिद्धराज** की पुत्री **कंचन देवी** से विवाह किया था।
- हत्या इनके बेटे **जगदेव चौहान** ने की (चौहानों का पितृहंता)।
- अर्णोराज के चार पुत्र **जगदेव, विग्रहराज चतुर्थ, अपरगांगेय तथा सोमेश्वर** चारों शासक बने।
- **बिजौलिया अभिलेख** में सोमेश्वर की उपाधि **प्रताप लंकेश्वर** मिलती है।

विग्रहराज चतुर्थ / बीसलदेव चौहान (1158-1163 ई.)

- गजनी के शासक **अमीर खुशरोशाह** तथा दिल्ली के तोमर शासक **तंवर** को पराजित कर दिल्ली पर अधिकार किया।
- दिल्ली पर अधिकार करने वाला प्रथम चौहान शासक था।
- इनका काल चौहान वंश का **स्वर्णकाल** कहलाता है।

प्रमुख ग्रंथ

(1) ललित विग्रहराज

- यह ग्रंथ दरबारी कवि **सोमदेव** द्वारा लिखा गया, जिसमें **विग्रहराज - देसलदेवी** की प्रेम कहानी का काल्पनिक वर्णन मिलता है।

(2) बीसलदेव रासो

- दरबारी कवि **नरपति नाल्ह** द्वारा रचित ग्रंथ, जिसमें **बीसलदेव - राजमती** की प्रेम कहानी मिलती है।

- संस्कृत में **हरकेली नाटक** की रचना की।
- इनके समय **दिल्ली शिवालिक स्तम्भ अभिलेख (1163 ई.)** उत्कीर्ण हुआ, जिसमें जानकारी मिलती है कि **विग्रहराज चतुर्थ** ने **म्लेच्छों** को बार-बार पराजित किया।
- अजमेर में **संस्कृत पाठशाला (सरस्वती कण्ठाभरण)** का निर्माण कराया, जिसे 1198 ई. में मोहम्मद गौरी के सेनापति **कुतुबुद्दीन ऐबक** ने तोड़कर **अढ़ाई दिन का झोपड़ा (मस्जिद)** बना दिया। यहाँ **पंजाब शाह पीर** का ढाई दिन का उर्स लगता है। यह राजस्थान की **प्रथम (प्राचीन) मस्जिद** है।
- कवियों एवं विद्वानों का आश्रयदाता होने के कारण इन्हें **कवि बान्धव** (जयानक भट्ट ने कहा) कहा जाता है।
- **जाबालिपुर** का नाम **ज्वालापुर** कर दिया।
- टोंक में **बीसलपुर कस्बा** तथा **बीसलसागर बाँध** बनवाया।

पृथ्वीराज चौहान द्वितीय

- इनकी रानी **सुहवदेवी** ने **मेनाल** में **सुहवेश्वर शिव मंदिर** का निर्माण कराया।

पृथ्वीराज चौहान तृतीय (1177-1192 ई.)

- **जन्म** - 1166 ई., **अहिलपाटन (गुजरात)**
- **पिता** - सोमेश्वर
- **माता** - कर्पूरी देवी
- **सेनाध्यक्ष** - भुवनमल्ल
- **मुख्यमंत्री** - कदम्बवास / कैमास (पृथ्वीराज का परमर्षी मंत्री भी था)
- पृथ्वीराज चौहान 11 वर्ष की आयु में शासक बने।
- पृथ्वीराज चौहान के नाना **अनंगपाल तोमर** ने दिल्ली में **लालकोट किले** का निर्माण कराया। इस किले को पृथ्वीराज चौहान तृतीय ने मोहम्मद गौरी से जीतकर इसका नाम **पिथौरागढ़** रख दिया था।

भंडानकों का दमन - 1182 ई.

- मथुरा-भरतपुर के क्षेत्र में पृथ्वीराज ने इनका दमन किया।

महोबा विजय - 1182 ई.

- महोबा (उत्तर प्रदेश) के चंदेल शासक परमादिदेव के वीर सेनापति आल्हा-ऊदल (भाई) को पृथ्वीराज चौहान ने युद्ध में मार दिया।
- पृथ्वीराज ने पञ्जूनराय कछवाहा को महोबा का उत्तराधिकारी नियुक्त किया।

चालुक्यों पर विजय - 1184 ई.

- गुजरात के चालुक्यों और अजमेर के चौहानों के बीच लंबे समय से संघर्ष चल रहा था।
- पृथ्वीराज रासो के अनुसार पृथ्वीराज ने इच्छिनी (इच्छन) राजकुमारी से विवाह कर लिया, जिससे गुजरात के चालुक्य शासक भीमदेव द्वितीय नाराज हो गये।
- भीमदेव द्वितीय के प्रधानमंत्री जगदेव प्रतिहार व पृथ्वीराज की सेना के मध्य नागौर का युद्ध हुआ, बाद में संधि हो गई।

कन्नौज

- कन्नौज (उत्तर प्रदेश) के शासक जयचंद गहड़वाल की पुत्री संयोगिता से पृथ्वीराज ने गंधर्व विवाह किया।

तराइन का प्रथम युद्ध - 1191 ई.

- तराइन वर्तमान में करनाल (हरियाणा) में है।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय व मोहम्मद गौरी के मध्य युद्ध हुआ, जिसमें पृथ्वीराज चौहान जीत गये।
- पृथ्वीराज चौहान के दिल्ली सामंत गोविंदराज ने मुहम्मद गौरी का दाँत तोड़ दिया। मुहम्मद गौरी गजनी भाग गया, लेकिन पृथ्वीराज ने गौरी की सेना का पीछा नहीं किया।

तराइन का द्वितीय युद्ध - 1192 ई.

- पृथ्वीराज चौहान तृतीय व मुहम्मद गौरी के मध्य हुआ।
- पृथ्वीराज चौहान हार गये।
- भारत में मुस्लिम शासन की स्थापना हुई।
- पृथ्वीराज चौहान को सिरसा के पास बंदी बना लिया गया।
- पृथ्वीराज रासो के अनुसार मुहम्मद गौरी पृथ्वीराज को गजनी ले गया, जहाँ चंदबरदाई ने एक दोहा बोला और शब्दभेदी बाण से पृथ्वीराज ने मुहम्मद गौरी को मार दिया।

**"चार बाँस चौबीस गज, अंगुल अष्ट प्रमाण।
ता ऊपर सुल्तान हैं, मत चूके चौहान।।"**

महत्वपूर्ण बिंदु

- मुहम्मद गौरी भारत में मुस्लिम साम्राज्य का संस्थापक बना।
- पृथ्वीराज चौहान को अंतिम हिन्दू सम्राट कहा जाता है।
- पृथ्वीराज चौहान ने चारों ओर दुश्मनों का खात्मा कर दलपंगुल (विश्वविजेता) की उपाधि धारण की। इनकी अन्य उपाधि रायरायपितोरा भी है।
- पृथ्वीराज चौहान के दरबारी कवि चंदबरदाई, जयानक, विद्यापति गौड़, गोविंदराज नर्दिन, आशाधर, विश्वरूप थे।
- पृथ्वीराज रासो ग्रंथ (पिंगल भाषा में) चंदबरदाई ने लिखा। इस ग्रंथ को चंदबरदाई के पुत्र जल्हण ने पूरा किया।
- नोट: चंदबरदाई का मूल नाम पृथ्वी भट्ट बल्लादी था।
- पृथ्वीराज विजय ग्रंथ (संस्कृत भाषा में) जयानक ने लिखा।
- पृथ्वीराज चौहान के घोड़े का नाम नाट्यरम्भा था।
- पृथ्वीराज की छतरी काबुल (अफगानिस्तान) में है।
- पृथ्वीराज का स्मारक तारागढ़ (अजमेर) है।

रणथम्भौर के चौहान

गोविंदराज चौहान - 1194 ई.

- पृथ्वीराज चौहान के पुत्र।
- कुतुबुद्दीन ऐबक ने रणथम्भौर की जागीर दे दी।
- रणथम्भौर के चौहान वंश का संस्थापक।

वीरनारायण

- इल्तुतमिश से संघर्ष हुआ, जिसमें इनकी मृत्यु हो गयी।

वागभट्ट

- दिल्ली सल्तनत की रजिया सुल्तान के रणथम्भौर आक्रमण को विफल किया था।

जैत्रसिंह

- नासिरुद्दीन के रणथम्भौर आक्रमण को विफल किया।

हम्मीर देव चौहान (1282-1301 ई.)

- रणथम्भौर चौहान शासकों में सबसे प्रतापी शासक।
- विजय अभियानों के लिए **कोटियज्ञ यज्ञ** का आयोजन करवाया, जो पंडित **विश्वरूप** की देखरेख में हुआ।
- मेवाड़ शासक **समरसिंह** को पराजित किया।
- दिल्ली शासक **जलालुद्दीन खिलजी** ने 1290 ई. में **झाँई दुर्ग** पर आक्रमण किया और झाँई दुर्ग को जीत लिया।
- झाँई दुर्ग की रक्षा करते हुए **गुरुदास सैनी** मारा गया।
- रणथम्भौर दुर्ग पर जलालुद्दीन खिलजी ने 1291-92 ई. में दो बार आक्रमण किया, लेकिन दुर्ग जीत नहीं पाया। तब कहा, "ऐसे 10 दुर्गों को मैं मुसलमान के एक बाल के बराबर भी नहीं समझता।"
- इस अभियान का वर्णन **अमीर खुसरो** की रचना "मिफ्ता-उल-फ़तूह" व **जियाउद्दीन बरनी** की पुस्तक "तारीख-ए-फ़िरोजशाही" में है।
- हम्मीर देव ने 17 युद्ध लड़े थे, जिनमें 16 जीते थे।

अलाउद्दीन के आक्रमण का कारण

- हम्मीर देव चौहान ने अलाउद्दीन खिलजी के विद्रोही सेनापति **वीर मुहम्मद शाह** व **केहबू (भाई)** को शरण दी।
- गुजरात अभियान के समय **मुहम्मद शाह** सारा धन लेकर हम्मीर देव चौहान के पास चला गया था।
- **हम्मीर हठ** के अनुसार मुहम्मद शाह को अलाउद्दीन खिलजी की बेगम **चिमना** से प्रेम हो गया था और दोनों मिलकर अलाउद्दीन को मारना चाहते थे।

अलाउद्दीन खिलजी का आक्रमण

- जब हम्मीर ने मुहम्मद शाह को लौटाने से मना कर दिया, तो अलाउद्दीन खिलजी ने **उलूग खाँ** और **नुसरत खाँ** के नेतृत्व में सेना भेजी।
- इस सेना ने **झाँई दुर्ग** पर अधिकार कर लिया।

- हम्मीर देव चौहान ने अपने दो सैनिक अधिकारी **भीमसिंह** व **धर्मसिंह** को भेजा।
- अलाउद्दीन की सेना को पराजित कर धर्मसिंह रणथम्भौर की ओर लौट गया, **भीमसिंह** को मार दिया गया।
- हम्मीर देव चौहान ने भीमसिंह की मृत्यु के लिए धर्मसिंह को उत्तरदायी ठहराया।
- हम्मीर ने धर्मसिंह को हटाकर उसके भाई **भोज** को सेनापति नियुक्त किया, लेकिन बाद में हम्मीर देव ने भोज को भी निकाल दिया। भोज अलाउद्दीन के पास चला गया और रणथम्भौर दुर्ग पर आक्रमण करने के लिए कहा।

अलाउद्दीन खिलजी की सेना का आक्रमण

- अलाउद्दीन ने रणथम्भौर पर आक्रमण करने के लिए अपने दो सेनापति **उलूग खाँ** और **नुसरत खाँ** को भेजा।
- हम्मीर की सेना ने **नुसरत खाँ** को मार दिया।

अलाउद्दीन खिलजी का आना

- **अमीर खुसरो** (रचना - खजाइन-उल-फुतूह / तारीख-ए-अलाई) भी अलाउद्दीन की सेना के साथ आया था, जिसने युद्ध का आँखों देखा वर्णन किया है।
- अलाउद्दीन ने लगभग **एक वर्ष** तक रणथम्भौर दुर्ग में डेरा डाले रखा, जिससे दुर्ग में खाद्य सामग्री का अभाव हो गया।
- अमीर खुसरो कहता है, "सोने के 2 दानों के बदले चावल का दाना भी नसीब नहीं हो रहा था।"
- अलाउद्दीन ने हम्मीर देव के सेनापति **रणमल** व **रतिपाल** को दुर्ग देने का लालच देकर अपनी ओर मिला लिया।
- **साका - ११ जुलाई १३०१**
- हम्मीर देव की पत्नी **रंगदेवी** व पुत्री **देवलदेवी** ने रणथम्भौर दुर्ग में स्थित **पद्मला तालाब** में कूदकर जौहर किया।
- हम्मीर देव चौहान ने **केसरिया** किया।
- **राजस्थान का प्रथम साका व एकमात्र जल जौहर** है।
- **मुहम्मद शाह** भी हम्मीर देव की तरफ से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुआ।
- रणथम्भौर विजय के बाद अमीर खुसरो लिखता है, "आज कुफ्र का घर इस्लाम का घर हो गया।"
- अलाउद्दीन ने रणथम्भौर दुर्ग **उलूग खाँ** को सौंप दिया।

- **विज्जादित्य** नामक कवि हम्मीर देव के दरबार में था।

नोट:

हम्मीर देव ने अपने पिता **जैत्रसिंह** के 32 वर्षों के शासन की याद में रणथम्भौर दुर्ग में **32 खम्भों की छतरी** बनवाई, जिसे **न्याय की छतरी** कहते हैं।

हम्मीर देव चौहान के लिए कहा गया है:-

"सिंह सबन सत्पुरुष वचन, कदली फले एक बार।
तिरिया तेल हम्मीर हठ, चढ़े ना दूजी बार।।"

प्रमुख ग्रंथ एवं लेखक

ग्रंथ	लेखक
हम्मीर महाकाव्य	नयन चन्द्र सूरी
हम्मीर रासो	शारंगधर (14वीं सदी, संस्कृत भाषा)
हम्मीर रासो	जोधराज (18वीं सदी, डिंगल भाषा)
हम्मीर हठ	चन्द्रशेखर
सुर्जन चरित्र	चन्द्रशेखर
हम्मीर बंधन	अमृत कैलाश
हम्मीरायण	भांडउ व्यास

नाडोल के चौहान

- शाकम्भरी के चौहानों के बाद यह प्रथम चौहान राज्य था।
- **संस्थापक - लक्ष्मण चौहान - 960 ई.**
(शाकम्भरी नरेश वाक्पति राज का पुत्र था।)
- नाडोल शाखा के **कीर्तिपाल चौहान** ने मेवाड़ शासक **समरसिंह** को पराजित कर मेवाड़ को अपने अधीन किया।
- नाडोल के चौहान जालौर के चौहानों में विलीन हो गये थे।

जालौर के चौहान

- **संस्थापक - कीर्तिपाल चौहान - 1181 ई.**
- कीर्तिपाल चौहान ने जालौर को **परमारों** से छीनकर जालौर पर अधिकार कर लिया।
- प्राचीन शिलालेखों में जालौर का नाम **जाबालिपुर** तथा जालौर किले का नाम **स्वर्णगिरि** मिलता है।
- **सोनगढ़ पर्वत** से इस शाखा का नाम **सोनगरा चौहान** है।

चाचिगदेव

- दिल्ली के सुल्तान **नासिरुद्दीन महमूद** तथा **बलबन** का समकालीन था, फिर भी इनके समय आक्रमण नहीं हुआ।

कान्हड़देव चौहान (1305-1311 ई.)

- **कान्हड़देव प्रबन्ध** ग्रंथ (रचयिता - **पद्मनाभ**, जालौर के शासक अखैराज का दरबारी) के अनुसार अलाउद्दीन खिलजी ने गुजरात अभियान के लिए रास्ता माँगा था।
- कान्हड़देव के **मुख्यमंत्री जेता देवड़ा** ने अलाउद्दीन खिलजी की सेना पर हमला कर दिया।
- **मुहणोत नैणसी** के अनुसार अलाउद्दीन खिलजी की पुत्री **फिरोजा** कान्हड़देव के पुत्र **वीरमदेव** से शादी करना चाहती थी, परंतु वीरमदेव ने शादी करने से मना कर दिया।

अलाउद्दीन खिलजी का सिवाणा अभियान - 2 जुलाई 1308

- अलाउद्दीन की सेना ने सेनापति **कमालुद्दीन गुर्ग** के नेतृत्व में सिवाणा दुर्ग पर आक्रमण कर दिया।
- सिवाणा का सेनापति - **सातलदेव** (कान्हड़देव का भतीजा)।
- देशद्रोही **भावला पवार** ने सिवाणा किले के पानी में गोमांस मिलाकर उसे अपवित्र कर दिया।
- अलाउद्दीन के सेनानायक **नाहरखाँ** तथा **भोज** मारे गये।
- सातलदेव के नेतृत्व में **केसरिया** हुआ।
- महिलाओं ने **जौहर** किया।
- अलाउद्दीन खिलजी ने विजय के बाद **सिवाणा दुर्ग** का नाम **खैराबाद** रखा और दुर्ग **कमालुद्दीन गुर्ग** को सौंप दिया।

जालौर अभियान - 1311 ई.

- कान्हड़देव के सेनापति **दहिया बीका** ने शत्रु सेना को जालौर दुर्ग तक पहुँचने का सुरक्षित मार्ग बता दिया।
- कान्हड़देव व उसका पुत्र **वीरमदेव सोनगरा** अलाउद्दीन की सेना के साथ युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।
- कान्हड़देव की रानी **जैतलदे** के नेतृत्व में महिलाओं ने जौहर किया।
- अलाउद्दीन खिलजी ने जालौर दुर्ग का नाम **जलालाबाद** रखा।
- इस युद्ध का वर्णन **पद्मनाभ** के ग्रंथ **वीरमदेव सोनगरा री बात** व **हम्मीरायण** में भी मिलता है।

नोटः

कान्हड़देव के भाई **मालदेव सोनगरा** ने अलाउद्दीन की अधीनता स्वीकार कर ली, जिसे बाद में **चित्तौड़ किले** का भार सौंपा गया।

सिरोही के चौहान

- प्राचीन साहित्य में सिरोही का नाम **अर्बुद प्रदेश** मिलता है।
- **कर्नल जेम्स टॉड** के अनुसार सिरोही का मूल नाम **शिवपुरी** था।
- सिरोही का पुराना नाम **सरणवाही** भी मिलता है।
- प्रारम्भ में आबू में **परमारों** का शासन था, जिसका संस्थापक **धूमराज** था, जिनकी राजधानी **चन्द्रावती** थी।
- बाद में **सहसमल** ने सिरोही नगर की स्थापना की।

लूंबा चौहान

- सिरोही की **देवड़ा शाखा** का संस्थापक / आदि पुरुष।
- **1311 ई.** के लगभग आबू और चन्द्रावती को परमारों से छीनकर देवड़ा शाखा की स्थापना की।

देवड़ा चौहानों के कुलदेव – सारणेश्वर महादेव

अखैराज देवड़ा

- उपनाम – **उड़ना अखैराज**
- **1527** के **खानवा युद्ध** में महाराणा सांगा का साथ दिया।

सुरतान देवड़ा

- दत्ताणी के युद्ध (अक्टूबर 1583) में महाराणा प्रताप के भाई जगमाल (अकबर का सेनापति) को मार दिया था।

बूंदी के चौहान

- कंसकालीन लेख में बूंदी का नाम वृन्दावती।

देवीसिंह हाड़ा

- बूंदी के शासक जेता मीणा को पराजित कर बूंदी राज्य में हाड़ा चौहान वंश की स्थापना की।

राव सुर्जन हाड़ा

- अकबर चित्तौड़ का किला जीतकर रणथम्भौर के चारों ओर घेरा डालता है। उस समय सुर्जन हाड़ा ने 1569 में अकबर से संधि की थी।
- अकबर ने सुर्जन हाड़ा को राव राजा की उपाधि दी तथा 5000 का मनसबदार बनाया।
- सुर्जन हाड़ा के कहने पर कवि चन्द्रशेखर ने "सुर्जन चरित्र" ग्रंथ की रचना की थी।

राव रतनसिंह हाड़ा

- जहाँगीर ने 5000 का मनसबदार बनाया तथा इनके न्याय के कारण इनको "रामराज" व चित्रकला प्रेमी होने के कारण "सर बुलन्द राय" की उपाधि दी।

राव शत्रुशाल (छत्रशाल) हाड़ा

- केशोरायपाटन (बूंदी) में केशवराय मंदिर बनवाया।
- बूंदी किले में रंगमहल का निर्माण करवाया।

अनिरुद्ध हाड़ा

- इनके शासनकाल में 1683 से 1695 ई. में देवपुरा गाँव (बूंदी) में 84 खम्भों की छतरी का निर्माण राव देवा ने करवाया।
- इनकी पत्नी नाथावती ने 1699 ई. में बूंदी में रानी जी की बावड़ी का निर्माण अपने पुत्र बुद्धसिंह के काल में करवाया।

- इनका पुत्र **जोधसिंह हाड़ा जैतसागर तालाब (बूंदी)** में गणगौर के अवसर पर रानियों और गणगौर की प्रतिमा के साथ डूब गया था। इसलिए कहावत प्रसिद्ध है:

"हाड़ो ले डूब्या गणगौर"

राव बुद्धसिंह

- नेहरुग्रंथ की रचना की।
- इनके समय मुगल बादशाह **फर्रुखसियर** ने बूंदी का नाम **फर्रुखाबाद** रखा था।
- बुद्धसिंह की कच्छवाहा रानी **अमर कंवरी** ने अपने पुत्र **उम्मेदसिंह** को राजा बनाने के लिए अपने राखीबंध भाई **मराठा सरदार मल्हार राव होल्कर** को बुलाया था।
- **सवाई जयसिंह** ने **दलेल सिंह** को बूंदी शासक बना दिया था।
- **राजस्थान में सर्वप्रथम (18 अप्रैल 1734)** मराठों का प्रवेश **बूंदी** से हुआ था।

उम्मेद सिंह

- उम्मेद सिंह के पास **हंजा** नामक घोड़ा था।
- **तारागढ़ किला (बूंदी)** में **चित्रशाला** का निर्माण करवाया।

विष्णु सिंह

- **1818** में ईस्ट इंडिया कंपनी से संधि की।

बहादुर सिंह

- **बूंदी** के अंतिम शासक।

कोटा के चौहान

- **कोटिया भील** के नाम पर कोटा नाम पड़ा।
- कोटा का पुराना नाम **नंदग्राम**।
- कोटा प्रारम्भ में **बूंदी** रियासत का ही भाग था। यहाँ पर भी चौहानों की **हाड़ा शाखा** का शासन था।

- 1631 में शाहजहाँ ने बूंदी नरेश रतनसिंह के पुत्र माधोसिंह (कोटा का संस्थापक) को कोटा दे दिया।

मांगरोल का युद्ध - 1821

- कोटा महाराव किशोरसिंह द्वितीय व झाला जालिम सिंह (कोटा के फौजदार / प्रशासक) के मध्य कोटा की प्रशासनिक शक्तियों को लेकर बारां के पास मांगरोल का युद्ध हुआ।
- इसमें अंग्रेजों ने जालिम सिंह का साथ दिया।
- युद्ध जीतने के बाद जालिम सिंह कोटा प्रशासन का सर्वेसर्वा बन गया था।
- 1838 में झाला मदन सिंह (जालिम सिंह का पौता) को अंग्रेजों ने कोटा रियासत के 17 परगने देकर झालावाड़ रियासत बना दी, जिसकी राजधानी झालरापाटन रखी।

नोटः

अंग्रेजों द्वारा बनाई गई राजस्थान की अंतिम रियासत झालावाड़ थी।

